श्री बालाजी (उनाव दतिया)

मध्यप्रदेश के जिला दतिया से पूर्व की ओर 17 कि.मी और उत्तर प्रदेश के झांसी से उत्तर की ओर 15 कि.मी की दूरी पर ऐतिहासिक तीर्थ स्थल बालाजी धाम स्थित है।

विंध्य पर्वत श्रंखलाओं की वन श्री को प्राणदान देती हुई पुण्य सलिला पुष्पावती (पहुज नदी) अपनी निर्मल जल धारा से अंशुमाली भगवान भास्कर के चरणों को पखारती हुई सूर्य चरणामृत को ले यमुना के हृदय में समाहित होती है। प्रकृति का ऐसा विहगम दृश्य अन्यत्र नहीं। मंदिर के चारों ओर पर्वत श्रंखलायें और हरियाली अपनी मनोहारी छटा से दर्शकों को सहज ही मोहित करती है। मध्य भारत तथा उत्तर भारत का यह स्थान उनाव बालाजी तीर्थ स्थल के रूप में अति प्राचीन है। अपूर्व सिंदूरी से सम्पन्न भगवान भास्कर चाहे उत्तरायण हों या दक्षिणायन उनकी प्रथम किरण यहाँ स्थापित मंदिर की प्रतिमा का अभिषेक करती है। यहाँ के बारे में ऐसी मान्यता है कि जो श्रद्धालु सच्चे मन से यहां आता है वह कुष्ठ रोग जैसी असाध्य बीमारी के साथ–साथ छाजन झरा रोऊआ आदि चर्म रोंगो से मुक्ति पाकर धन धान्य से पूर्ण हो मन बांछित फल को प्राप्त करता है।

उनाव नगरी में प्रवेश करने के लिये प्राचीन काल में चारों ओर तोरण द्वार बनवाये गये थेजो झांसी से आने के लिये दक्षिण की ओर दतिया से आने बालों को पश्चिम की ओर तथा भाण्डेर से आने के लिये उत्तर की ओर तथा मंदिर में जाने बालों के लिये पूर्व की ओर के थे। इन्ही तोरण द्वारों के साथ–साथ कस्बे के बाजार का निर्माण भी कराया गया था जिसके वर्तमान में यदा कदा अवशेष ही प्राप्त होते हैं।

मंदिर प्रवेश के प्रमुख तोरण द्वार के साथ ही साथ उत्तर मुखी एवं दक्षिण मुखी तोरण द्वार भी निर्मित है, जिनके आस–पास विभिन्न कक्ष एवं विश्रांतिगृह बने हुये है। प्रमुख द्वार में प्रवेश करते ही हमें हबेली प्रांगण मिलता है, जिसके दॉयी ओर यानि उत्तर की तरफ फिर एक द्वार मिलता है, जिसके माध्यम से हम मंदिर प्रांगण में प्रविष्ट होते है। वहॉ से दृष्टि डालने पर हमें पूर्व की ओर मंदिर द्वार के दर्शन होते हैं। सामने दक्षिण की ओर एक तोरण द्वार बना हुआ है। समीप में ही प्रवचन मंच सामने नया तुलसी घरूआ, मंदिर परिक्रमा और मंदिर के चारों ओर अनेक छोटे बड़े मंदिर निर्मित हैं। मंदिर प्रांगण विशाल महिराबों अट्टालिकाओं और बुर्जो से घिरा हुआ है। मंदिर से लगभग साठ फीट नीचे पावन पुष्पा वती अपने मंथर बेग से प्रवाहमान है।

42 सीढ़ियाँ पार करके हम नदी में पहुँच जाते है जहॉ मध्यान में हमें गणेश और महावीर की विशाल मूर्तियाँ मिलती है। जिन्हे प्रायः सिंह पौर के नाम से जाना जाता है। नदी में चार कुण्ड हैं जिन्हे चौपरा कहा जाता है। नदी के उस पार राधाकृष्ण मंदिर (पटैरिया का मंदिर) पहले पार के

हनुमान जी का मंदिर, यज्ञवेदी, श्मशानघाट के पास प्राचीन भूतनाथ शिव मंदिर भी दर्शनीय है।

यहाँ का प्रसिद्ध फल अमरूद था जिन्हे बालाजी का लड्डू भी कहा जाता था। नदी के चारों तरफ अमरूदों के बगीचे ही बगीचे थे लेकिन अब इन बगीचों की मात्रा बहुत कम हो गई है और अमरूद का उत्पादन भी।

भगवान बालाजी का मंदिर स्थाकार है। मंदिर के द्वार के ऊपरी भाग की भित्तियों पर पीत, हरित एवं रक्तिमवर्ण के चित्र चित्रित हैं। गज, मयूर, अश्व, तथा अक्षौहणिसेना के अंश चित्र भी विद्यमान है जो मंदिर की जीर्णता के कारण अब अवशेष मात्र रह गये हैं। आज ये तत्कालीन कला के चुनौती पूर्ण उत्कृष्ट नमूने हैं जो बुन्देली नरेशों की स्थापत्य कला कीर्ति का गुणगान करते हैं।

मूर्ति की स्थापना और आकार

दर असल बालाजी मंदिर में मूर्ति के स्थान पर एक अति प्राचीन पाषांण यंत्र है जो श्री बालार्क के रूप में पूजा जाता है। प्राचीन काल में पाषाण यंत्र की प्रतिष्ठाप्ना जिस जगह हुई थी उस जगह का निर्माण कच्चे चौकों से करवाया गया था। आज उसकी स्थिति इस प्रकार से है–

सिंहासन जिस पर मरीचमाली भगवान भास्कर विराजमान हैं, उसकी ऊँचाई 4 फीट 3 इंच, लम्बाई 6 फीट एवं चौडाई 3 फीट 10 इंच है। सिंहासन के ऊपर एक चौकी बनी हुई है। वह चौकी वर्गाकार है जिसकी प्रत्येक भुजा 2 फीट 1 इंच है।

चौकी पर ऊर्ध्वाकार 12 इंच 2 सें.मी. चौडाई लिये हुये ,14. इंच लम्बाई लिये हुये बृत्ताकार आकृति में भगवान भास्कार की दिव्य छटा के दर्शन होते हैं। प्रकृति में पंचतत्वों के महत्व को प्रतिपादित करने के प्रतीक मंदिर के अंदर पंच देवों के प्रतिमान विराजे हैं। शीर्ष पर दिवाकर पत्नि संज्ञादेवी, दांयी ओर विष्णु भगवान, बायी तरफ प्रथम देव गणेश, आदि शक्ति अम्बा विराजमान हैं। सिंहासन के दौनों तरफ शिवलिंग भी स्थापित हैं।

चाँदी के कपाट, दहलीज एवं द्वार को पार कर हमें बॉयी तरफ दो चौकियों के दर्शन होते है जिनमें भगवान दिनकर की पीतल और चाँदी की दो प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं, जो छोटी चौकियों पर स्थापित हैं। सिंहासन के सामने दालान के एक खम्बे पर भगवान भास्कर की अखण्ड ज्योति प्रज्ज्वलित हो रही है जो आंखों को तेज और मन को शीतलता प्रदान करने बाली है। आने बाले दर्शनार्थी उस दीप की ज्योति से गर्मी प्राप्त कर मन को शीतलता और शांति पहुँचाने की कामना करते है।

शताब्दियों से श्रद्धालुओं द्वारा भगवान की मूर्ति पर जल चढ़ाने की वजह इस प्रतिमा में काफी चिकनापन आ गया है। गहन निरीक्षण से पता चलता है कि प्रतिभा के अग्रिम बायें एवं पश्च भाग में बारह उभार है, जो भगवान भास्कर के यंत्र में बारह कलाओं से प्रविष्ट होने की प्रमाणिकता को पुष्ट करते हैं।

पौराणिक आख्यान और किंबदंतियाँ

बात सतयुग की है। काशी के महाराज मरूत द्वारा विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें समस्त देवताओं ने सदेह आकर भाग लिया, किन्तु प्रचण्ड तेज सम्पन्न होने के कारण भगवान बालाजी ने आकाशवाणीं कर महाराज मरूत को पाषाण यंत्र निर्माण कराने का आदेश दिया। बिधि विधान से यंत्र का निर्माण हुआ, मंत्रोच्चारण से भगवान भुवन का आह्वान किया गया जिसमें वह बारह कलाओं के माध्यम से बालार्क रूप में प्रविष्ट हुये। यज्ञ सानंद सम्पन्न हुआ किन्तु भगवान भास्कर के विसर्जन की सुधि किसी को न रही। प्रतिमा वहीं भू गर्भ में समा गई।

भारत वर्ष की धरा जो ऋषियों की तपस्थली रही। कर्मकाण्ड का विधान यहॉ युगों से है। जहॉ ऐसी मान्यता है कि शक्ति उपयुक्त समय आने पर अपने चमत्कार से जगती तल को चमत्कृत करती है। इस अनुपम तेजमयी शक्ति ने चन्द्रगुप्त द्वितीय (375 ई. से 414 ई.) के शासन काल में अमरकोष के रचयिता काशी के प्रकाण्ड पण्डित अमर सिंह सौरा को अपने प्राकाट्य का साधन मानते हुये स्वप्न में धरणि के उस भाग को बताया जहॉ से उनका प्रादुर्भाव निश्चित था। अमर सिह सौरा ने देवादेश का पालन कर शक्ति पुंज को भूगर्भ से निकाल कर अपने पास सुरक्षित कर लिया और पूजा अचर्ना करने लगे।

चन्द्रगुप्त द्वितीय को विक्रमादित्य के नाम से भी इतिहास में जाना जाता है। जो न्यायप्रिय शासक के साथ–साथ धर्मनिष्ठ भी था। इसके राज्य में विभिन्न धार्मिक आयोजनों के साथ शास्त्रार्थ भी हुआ करते थे। एक बार ज्योतिषीय गणना के ऊपर राजगुरू और अमर सिंह सौरा के बीच शास्त्रार्थ हुआ। जिसमें अमर सिंह सौरा ने अमावस्या के दिन पूर्ण मासी होने की पुष्टि की। उनकी यह बात असत्य थी। सो अमर सिंह सौरा ने अपनी इस गलती को छिपाने के लिये चंद्र–चंद्रिका तंत्र विद्या द्वारा कॉसे की थाली पर चंदन का लेप कर आकाश मार्ग में उछाल दिया। चारों तरफ पूर्णमॉसी के चन्द्रमा के जैसा प्रकाश फैल गया राजगुरू ने उनकी इस विद्या को समझ लिया तथा महाराज से इस प्रकाश के बारह कोष तक ही होने के रहस्य को बताया। सांडनी (उटनी) के माध्यम से प्रकाश की दूरी की खोज कराई गई। राज्य में यह घटना आश्चर्य के साथ दण्डनीय भी थी जिसके भय से अमर सिंह सौरा रातों– रात भागते हुये यंत्र समेत उनाव आये। यहां नदी के किनारे वियावान निर्जन स्थान पर

पुनः इस शक्ति पुंज को भूगर्भ के सुपुर्द कर दिया।

कुछ जन श्रुतियॉ दतिया के प्रसिद्ध तांत्रिक ओझा हिमकर की ओर संकेत करतीं हैं कि इन्होने चन्द्र एवं चंद्रिका तंत्र विद्या का प्रयोग किया था। ये मान्यतायें अपुष्ट और भ्रामक हैं।

मंदिर के सामने नदी में उतरने के लिये बनी सीढ़ियों के बांयी ओर जिस स्थान पर हनुमान जी का मंदिर समेत तुलसी घर है उसी स्थान को बाल रवि का उद्गम स्थल मानते हैं। बहुत समय पहले यह स्थान बीहड़ था और नदी का किनारा होने के कारण पशुचारा के अलावा पानी की भी सुन्दर व्यवस्था थी। नित्यप्रति गायें यहां पानी पीने के लिये आया करतीं थी। लोधा जाति का यहॉ बाहुल्य था। उन्हीं गायों में से एक गाय जो लोध प्रधान की थी, अपने दूध का स्राव उद्गम स्थल पर करती थी। गाय की इस हरकत से क्रोधित लोध मुखिया ने एक दिन उस गाय पर तीव्र लाठी से प्रहार कर दिया जिससे गाय के प्राण चले गये। उसी दिन उक्त लोधी को रात्रि के समय भगवान भास्कर ने स्वप्न में आकर कहा–मूर्ख तूने मुझे दुग्ध से बंचित किया और गौहत्या भी कर डाली जा तेरा भी समूल विनाश होगा।

इस प्रकार उनाव ग्राम से लोधी लोध जाती का सम्पूर्ण विनाश हो गया। आज भी यहां कोई भी लोध जाती का स्थाई नागरिक नहीं है। समय चक्र अपने साथ में अमर सिह सौरा और लोधा आख्यान को बहा ले गया। जन मान्यता और प्रमाणिकता के आधार पर पुनः कहना होगा कि शक्ति का उपयुक्त समय पर प्रादुर्भाव होना निश्चित है सो कालान्तर में हुआ भी।

बहुत समय पश्चात् मऊरानीपुर के पास ग्राम कुरैचा के दो यायावर ब्राह्मण बालकों का आगमन उनाव हुआ। कर्मकाण्डी तेज सम्पन्न ब्रह्म कुमार सदाराम और भानू प्रकाश थे। दौनों ही बालक सूर्योपासक थे। उनाव के बरम जू काछी ने उन्हे अपने घर में आश्रय प्रदान किया। कुछ समय पश्चात उन ब्राह्मण कुमारों को अंशुमाली भगवान भास्कर ने स्वप्न में अपने यहॉ होने के रहस्य को उजागर कर भूगर्भ से निकालने का ओदश दिया। ईश्वरीय औंदश को शिरोधार्य कर बरम जू काछी समेत तीनों ने मिलकर प्राचीन तुलसी घरूआ के पास से भगवान भास्कर के शक्ति सम्पन्न यंत्र को निकाल कर उसी स्थान पर स्थापित किया जहॉ वह आज स्थित है। तब से लेकर आज तक भगवान बाला जी महाराज की नित्य प्रति विधि विधान से पूजा अर्चना चल रही है। मंदिर में सुवह –शाम दौनों सयम श्री बालाजी महाराज का पुष्प चन्दन अच्छित से भलिभांति श्रंगार किया जाता है तत्पश्चात आरती का विधान है। सुबह 10 बजे से 11 बजे तक राजभोग लगाया जाता है। राजभोग के समय श्रद्धालु जल नहीं चढ़ाते हैं। राजभोग उन्ही प्राचीन कुरैचा निवासी ब्राह्मणों के बंशजों के यहॉ से बनकर चॉदी के थाल में लगकर आता है। क्रमशः वही पण्डे पुजारी राज भोग की व्यवस्था करते हैं।

आज भी मंदिर की सेवा में ब्राह्मण और काछी बराबर के सहयोगी रहते हैं।

पुरातात्विक अवलोकन

उनाव में स्थित सूर्य मंदिर की प्राचीनता के बारे में जो ऐतिहासिक सत्यता है बो सर्वमान्य है किन्तु मंदिर में स्थापित जो रविचक्र है उसके बारे में सत्यानुमान लगाना दुष्कर कार्य बना हुआ है। भगवान भास्कर के उद्गम स्थल के बारे में भी कई प्रकार की धारणायें अलग–अलग स्थानों की ओर इशारा करतीं है। जहॉ प्राचीन तुलसीघर जो नदी की सीढ़ियों के बांयी ओर अपने में मारूतिनंदन की प्रतिभा को समेटे अपनी ऐतिहासिकता को खुद ही प्रमाणित करता है वही दूसरी तरफ एक नया तुलसीघर बना हैं।कुछ पुराविदों का मानना है कि यही वह प्राचीन स्थल है जहॉ पर एक विशाल एवं अति प्राचीन पीपल का वृक्ष था। उस लोधी की गाय यहीं दूध स्रबित करती थी। यहीं से भगवान भास्कर की पाषाण प्रतिमा का उद्गम हुआ था। इन सबसे हटकर कुछ लोग अंशुमाली भगवान भुवन के उद्गम स्थल को पहूज एवं अनगौरी नदी के संगम स्थल गौवरधन को मानते हैं। यह स्थान उनाव से झांसी की ओर जाने बाले मार्ग पर बॉयी ओर हटकर लगभग 2 किलों मीटर के आसपास माना जाता है। गौबर धन का अपभ्रंश गौरधन हैं, जो संभवतः गौधन या गूढ़ धन से संबंधित है। जो इस किंबदतिंकी पुष्टि का प्रमाण है। पहूज और अनगौरी संगम स्थल के बारे में ऐसी मान्यता थी कि यहॉ पर पत्थर के दो नादिया (बैल) बने हुये थे समीप ही शिल्प पर बीजक (संकेत) उत्कीर्ण था, ''छोटा भाई बड़े को मारे तो धन पाबे'' जो ग्रामीणों की बुद्धि के बाहर था। यहीं के कुछ ग्रामिणों ने राजस्थान में रहने बाली एक बुढ़िया को उस बीजक के बारे में बताया। वह बुढ़िया उनाव आयी और उसने छोटा नादिया बड़े नादिया में मार दिया। बड़ा नादिया फूटा जिसमें से हीरे, जवाहरात और अमूल्य गहने निकले जिन्हे लेकर वह रातों रात भाग गई थी। उनाव के ही प्राचीन जानकार बरम जू काछी और ब्राह्मण बंशजों द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार भगवान भास्कर का उद्गम स्थल प्राचीन तुलसीघर ही है। किन्तु सर्वमान्यता के आधार पर गौरधन के महत्व को भी नकारा नहीं जा सकता इसीलिये यहाँ भी लोग देव उद्गम स्थल पर पूजा अर्चना करने आते हैं।

कुछ विद्धानों ने भगवान भास्कर के इस यंत्र को किरातीय संस्कृति के अनतर्गत पूजी जाने बाली यक्ष परम्परा की एक शिला माना है। यक्ष भी सुन्दर काया और धन धान्य प्रदान करने बाले देव माने गये हैं। कुष्ठरोग को दूर करने बाले इस क्षेत्र के यह देव बरम कहलाते हैं। यक्षराज कुवेर को भी बरम शब्द से सम्बोधित किया जाता था। इसीलिये यह भ्रम होना स्वाभविक है जो बाद में ब्र और अब सूर्य यंत्र के रूप में बालाजी के नाम से समूचे भारत में माने जाने लगे। प्राचीन काल से ऐसी मान्यता है कि यहॉ कोई मंदिर नहीं था। परासरी और उनाव में ~~सथापित~~ स्थापित सती चौरा विद्यमान थे। यह स्थान उनाव में बरम चौरा के नाम से यहीं पूजा जाता था। मालवा प्रांत से आने बाले श्रद्धालु

ग्लू इन्हें आज भी बरम बाला के नाम से संबोधित करते हैं।

कैप्टन लुआर्ड के अनुसार यह यंत्र एक पाषाण खण्ड है, जो षडान्गुल व्यास में है तथा जो 21 त्रिभुजों में सूर्य के 21 स्वरूपों का प्रतिनिधित्व करता है। कैप्टन लुआर्ड की माप मात्र काल्पनिक प्रतीत होती है और उनका अनुमान एक काल्पनिक कथा के अलावा कुछ नहीं हो सकता। अमेरिका के पेरू शहर में ऐसी ही मूर्ति की पुष्टि श्री चमनलाल द्वारा रचित " हिन्दू अमरिका " नामक पुस्तक में होती है। अमेरिका में भी इन्होने सूर्य पूजा के महत्व को प्रतिपादित किया। हिन्दू अमरिका पुस्तक में ही इन्होने सूर्य पूजा की भिन्न पद्धति को उद्धत करते हुये यंत्र की भिन्नता के बारे में भी स्पष्ट उल्लेख किया है। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि अमेरिका तो क्या विश्व में कोई भी ऐसी जगह नहीं जहॉ इस यंत्र के समान कोई दूसरे यंत्र होने की बात साबित हो।

दतिया से कुछ दूरी पर केवलारी से प्राप्त एक अन्य सूर्य प्रतिमा और बड़ौनी के पहाड़ पर गुप्तेश्वर मंदिर के दीवार में स्थित मूर्ति से ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र में छठीं शताब्दी पूर्व सूर्य मंदिरों का निर्माण किया गया था। ऐसा अनुमान है कि उनाव में स्थित सूर्य यंत्र के लिये जिस पाषाण खण्ड का उपयोग किया गया है वह केवलारी के मंदिर का अवशेष है। सवाल यह है कि केवलारी के मंदिर के पाषण अवशेष उनाव कैसे आये? इससे यह जानकारी भी भ्रामक लगती है।

ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि

17वीं शताब्दी के आरम्भ में मुगल सम्राट औरंगजेब जब हिन्दुओं की धार्मिक आस्थाओं को रौंदता हुआ, धर्मभ्रष्ट करता हुआ एवं पूजा गृहों को नष्ट करता हुआ आगे बढ़ रहा था। तभी आगा खॉ के नेतृत्व में मुगलिया सेना ने उनाव के बालाजी मंदिर पर भी धावा बोला जब मंदिर निर्माण नहीं हुआ था। स्थान के रक्षक पंडों पर आगा खॉ की सेना भारी पड़ी।मुगलों ने पण्डों को जमकर मारा। भगवान भास्कर के इस यंत्र पर जैसे ही मुगल सेना ने कुदृष्टि डाली और इसे तोडने के लिये आगे बढे वैसे ही वहां पर चमत्कार हुआ। एक तेज प्रकाश पुंज ने आगा खॉ के शरीर में अपार ज्वाला भर कर क्षत-विक्षत कर दिया। तेज की प्रचण्ड गर्मी के कारण आगा खॉ भूमि पर गिरकर बिलविलाने लगा उसने अपनी सेना समेत पीर बालाजी के दर पर गिर कर माफी की गुहार की तब जाकर वह शक्ति सम्पन्न प्रचण्ड तेज विलीन हुआ। जैसा कि चमत्कार को नमस्कार होता आया है ।आगा खॉ यहॉ से उल्टे पांव भाग कर खड़ा हुआ।

झांसी के सेनापित नारोशंकर कुष्ट रोग से ग्रसित थे। कुष्ट निवारण की प्राचीन मान्यता को शिरोधार्य कर नारोशंकर बालाजी आये और उन्होने इस स्थान पर पूजा अर्चना की । सच्चे मन से की गई सेवा सुश्रूषा से भगवान भास्कर ने प्रसन्न होकर नारोशंकर के कुष्ट रोग का निवारण किया।

परिणाम स्वरूप 1720–21 ई. में उनाव में उसने विशाल बालाजी के मंदिर निर्माण का संकल्प लिया। रियासती झगडों के चलते नारोंशंकर ने मंदिर निर्माण की नींब रखी और और मंदिर निर्माण कराया भी। उस समय झांसी में दतिया के अम्बाबाय, करारी जैसे क्षेत्र को मिला लिया गया था। दतिया की महारानी सीता जू को भय था कि मंदिर निर्माण के पश्चात उनाव को भी झांसी रियासत का हिस्सा न बना लें । इसी भय के कारण सीता जू की अनुनय विनय पर मंदिर निर्माण का कार्य अधूरा ही रहा। नारोशंकर ने मंदिर निर्माण की आधी राशि की उत्तर प्रदेश के कानुपर जिले के विठूर में गंगातत पर ब्रह्म घाट बनबा कर संकल्प को पूर्ण किया।

दतिया नरेश राव इंद्रजीत ने सन् (1736–1762) अपने शासन काल में मंदिर को पूर्ण करबाया। दतिया स्टेट गजेटिर के अनुसार सन् 1844 ई. में सिंधिया के मंत्री मासाहेब जादव ने मंदिर का विस्तार कराया। दतिया के महाराज भवानी सिंह (1857–1907) के शासन काल में मंदिर का विकास एवं उसके साथ बाजार का भी निर्माण कराया गया।

मंदिर प्रसिद्धि के कारण

जगत में भगवान सूर्य ही ऐसे देव हैं जो साक्षात प्रकट होकर विश्व से अंधकार को नष्ट करते हैं और प्रकृति एवं जीवन में गति प्रदान करते हुये कर्म की प्रेरणा का संचार करते हैं इनके रोज ही उदय और अस्त से मानव जीवन कर्म करने की शिक्षा को ग्रहण करता है। हर प्राणी में ऊर्जा का संचार करने बाले यह देव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सबकी सहायता करते हैं।

बालाजी धाम के बारे में ऐसी मान्यता है कि सच्चे मन से मांगी जाने बाली हर मनौती को पूर्ण करते है। सुन्दर काया, धन, दौलत, समस्याओं का निदान, पुत्र प्रप्ति, और मोक्ष प्रदान करने बाले भवान बालाजी ही हैं। किसी भी कार्य में बाधा हो तो यहॉ आकर मंदिर के पश्च भाग में उल्टे हाथे लगाकर कार्य पूर्ण होने की प्रार्थना की जाती है। कार्य पूर्ण होने पर हल्दी से सने हाथों को सीधा लगाया जाता है और श्रद्धालुओं द्वारा मंदिर पर दान दक्षिणा देने का बिधान है। यहॉ पर दूर–दूर से आने बाले दर्शनार्थी अपने बालकों के मुण्डन संस्कार को भी पूर्ण कराते हैं। आये दिन मंदिर से आदर्श शादियाँ भी होतीं हैं। प्राचीन परंपरा के चलते ग्राम में विवाह संस्कार होने के पूर्व ग्राम के प्रधान देव माता , बालाजी व हरदौल को पूजा जाता है। नव विवाहित दम्पत्ति शादी के पश्चात मंदिर पर आकर हाथे लगाते हैं व भगवान भास्कर का आशीर्वाद प्राप्त कर ग्रहस्थ जीवन में प्रवेश करते हैं।

सूर्योपासक सूर्य भगवान का दिन रविवार को मानते हैं। रविवार का ब्रत धारण करने बाले लोग इस दिन नमक को ग्रहण नहीं करते। सूर्यास्त के पूर्व दही व ~~दीप के साथ~~ फलाहार करने का

विधान है। सूर्यास्त के पश्चात जल ग्रहण भी नहीं किया जाता। सूर्योपासक रात्रि में ब्रत के दिन शैया का भी त्याग करते हैं।

कुष्ट रोग जैसी घ्रणित बीमारी हो या कोई भी चर्म रोग। बिना औषधि के जड़ से खत्म हो जाना इस दैवीय शक्ति का प्रत्यक्ष चमत्कार माना जाता है। इसीलिये बालाजी पर कोढ़ियों का जमघट लगा रहता है। इस मंदिर में बिना भेदभाव के हर धर्म के श्रद्धालु भगवान् भास्कर की पूजा करते हैं और जल चढ़ाते हैं। मंदिर में सध अर्थात् गीले बस्त्रों से जल चढ़ाने का विधान है। जो व्यक्ति कुष्ट या अन्य चर्म रोग से तृस्त रहते है, वह नदी के किनारे (दी) दीवार की मिट्टी का लेप बना कर शरीर में लगाते हैं। शरीर में लगी मिट्टी जब धूप में सूखती है तो शरीर में चिनमिनाहट सी पैदा होती है जो सूर्य की किरणों के माध्यम से शरीर पर क्रिया करती सी प्रतीत होती है फिर रोगी नदी में स्नान कर गीले वस्त्रों में ही मंदिर जाकर भगवान् भास्कर पर जल चढ़ाते हैं। ऐसानित्य करने पर शीघ्र ही उनके चर्मरोग नष्ट हो जाते हैं। अभी तक यह ज्ञान नहीं हुआ कि नदी के पानी में सांइंटीफिक कैमीकल है या मिट्टी में। इतना अवश्य है जब मिट्टी में रिफ्लेक्शन जैसी प्रतिक्रिया होती है और मिट्टी में स्वर्णकण जैसा चमकीला पदार्थ उभर कर दिखाई देता है।

बैसे तो रोज ही यहॉ बाहरी श्रद्धालुओं की भीड़ रहती है। लेकिन हर बुधवार और रविवार को यहॉ मेला लगता है। दशमी तिथि और माघ मास के रविवार महात्वपूर्ण माने गये हैं इन दिनों में यहॉ खासी भीड़ देखी जाती है। चाहे कार्तिक मांस का पावन पर्व हो या मल मास का महीना दूरवर्ती क्षेत्रों से भारी संख्या में स्त्री पुरूषों का आगमन होता है जो पुण्यतोया पावन पुष्पावती में स्नान कर सूर्य दर्शन लाभ से पुण्य प्राप्त करते हैं।

वर्ष के महात्वपूर्ण पर्व एवं त्योहार

हिन्दू संस्कृति में महत्वपूर्ण पर्व एवं त्योहारों का अपना अलग स्थान है। किसी भी पर्व को देव स्तुति के साथ आरंभ होना यहॉ की रीति और अपनी खुशी में देवों को साथ लेकर चलना भारतीय परंपरा का अभिजात्य आंग माना जाता है। वर्ष के जितने भी महोत्सव है,भारत में मंदिरों की सहभागिता के विना अपूर्ण माने जाते है। सनातन संस्कृति में नव संवत्सर से वर्ष का आरंभ मानते हैं। इसी दिन से यहॉ उत्सवों का सिलसिला शुरू हो जाता है।

वर्ष के प्रथम उत्सव के रूप में बालार्क मंदिर पर रामनवमी के दिन राजन्म को मनाते हैं। राम जन्मोत्सव में स्थानीय कलाकारों द्वारा मंदिर के चौक में भजन कीर्तन आदि होते हैं। आने बाले भक्तजनों को यहॉ प्रसाद के रूप में पंजीरी वितरित की जाती है।

अषाढ़ मास जो ग्रीष्म और वर्षा ऋतु का संधि काल माना जाता है। इसी माह के उत्तार्द्ध

में पड़ने बाली देव शयनी एकादशीके दिन यहॉ बड़ा भारी मेला लगता है। इस एकादशी के दिन यहॉ बड़ा भारी मेला लगता है। इस एकादशी का पौराणिक महत्व है। देवशयनी एकादशी को श्री हरि विष्णु राजा बलि के दरवार में बामन रूप में पहुॅचे थे एवं श्री हरि वास्तविक रूप में क्षीर सागर में शेष शैया पर शयन करने के लिये प्रस्थान करते हैं। इसीलिये देव शयनी एकादशी की पौराणिक प्रतिष्ठा प्रतिपादित करते हुये उनाव में बालाजी महाराज की शोभा यात्रा (रथ यात्रा) निकाली जाती है। सूर्योदय से ही यहॉ पर दर्शनार्थियों की भीड़ आनी शुरू हो जाती है। दोपहर बाद भगवान् बालाजी की चौकी बाली प्रतिमा को रथ में स्थापित कर पण्डे पुजारियों द्वारा श्रंगार किया जाता है। रथ को भी आकर्षक ढंग से सजाया जाता है। रथ भ्रमण के लिये तैयार होते ही रथ को खींचने के लिये श्रद्धालुओं का जमघट आ जाता है। ग्राम भ्रमण पर रथ के निकलते ही भक्तगण दर्शनार्थी रथ के आस–पास आ जाते है। भव्य रथ यात्रा देखकर प्रतीत होता है कि भगवान् भास्कर दूल्हा बनकर नर– नारियों को दर्शन दे रहे हों।

रथ के आगे संख झालरों की ध्वनि जहॉ किसी राजाधिराज के आगमन की घोषणा करती है, बहीं शास्त्रीय संगीत की चौक चौबंद गम्मतें प्राचीन रीति का बरबूबी निर्वाहन करती नजर आती है। झांसी और आस पास से आने बाले बैण्ड बाजे अपने गान–तान से भक्तों को नाचने पर विवश करते है। भक्ति भाव के साथ भगवान भास्कर की रथ यात्रा पर ग्राम में श्रद्धालुओं की अपार भीड़ को देखा जा सकता है। नगरीय भ्रमण में द्वार–द्वार पर नागिरिकों द्वारा भगवान भुवन का अभिषेक व पूजन किया जाता है। पण्डे पुजारी प्रसाद वितरित करते हुये आगे बढ़ते हैं। प्राचीन मान्यता है कि रथ के नीच निकलने से भगवान बालाजी मनुष्य को रोग और व्याधियों को नष्ट करते हैं। सो बच्चे बूढ़े भीड़ में रथ के नीचे से निकलने को लालायित रहते हैं और कुछ निकल भी जाते हैं। नगर में हुये रथ यात्रा पुनः हवेली प्रांगण तक आती है विद्युत की रौशनी से जगमगाते हुये हवेली प्रांगण में स्थानीय और बाहर से आये अतिशबाजों द्वारा भव्य अतिशबाजी का प्रदर्शन किया जाता है। अतिशी धमाकों और रौशनी के बीच भगवान बालाजी के गगन भेदी जयकारों से रात्रि की निस्तब्धता दिवस के कोलाहल पर भारी पड़ती है। चौकी के मंदिर में प्रविष्ट होते ही भगवान मरीचमाली की आरती की जाती है। विभिन्न क्षेत्रों से आने बाली महिलायें मंदिर प्रांगण में रात्रि जागरण कर नाचतीं गातीं रहतीं है। अषाढ़ मास की हरिशयनी एकादशी भगवान बालाजी के महत्ब पूर्ण पर्वों में से एक है जिसे भक्त तो आनंद से मनाते हैं लेकिन प्रकृति भी इस उत्सव में अपना सहयोग प्रदान करतीं है। आसमान कभी मेघाच्छारित हो जाता है तो कभी सुनहरी धूप विखेरता हुआ अठखेलियॉ करता है। मेघ कभी तेज गर्जना के साथ जयघोष भी करते हैं तो कभी भगवान भुवन पर बरस कर जल अर्पित करते हैं। तब ऐसा प्रतीत होता

है मानों आनंद में भर कर प्रकृति देवी भगवान भास्कर के रथ यात्रा उत्सव में नृत्य कर रही हों।

श्रावण मास की पूर्णिमा अर्थात् रक्षाबंधन के दिन बालाजी मंदिर में दिव्य झॉकी के दर्शन होते हैं। भाई बहिन के इस पावन पर्व पर जहॉ भगवान भास्कर से भाई कलाई पर राखी बॉध ने बहिनों की रक्षा के लिये खुद में सामर्ध्य प्राप्ति की कामना करते हैं वहीं श्रंगार से सुसज्जित बहिनें भाइयों की दीर्घायु की प्रार्थना करतीं हैं। श्रावण माह की दिव्य झॉकी को सावन की घटा कहा जाता है। इस दिन भगवान दिवाकर का भव्य श्रंगार किया जाता है। सिंहासन से लेकर दहलीज तक भगवान सूर्य के कुलुप (चौकी प्रतिमायें) समेत अन्य प्रतिमाओं को एक के बाद एक के क्रम में स्थापित किया जाता है।

बालाजी महाराज की प्रतिमा के ऊपर क्रमशः स्वर्ण एवं रजत छत्र रहते हैं। शीर्ष पर स्वर्ण मुकुट समेत अन्य आभूषणों और रेशमी व मखमली पोषाकों को धारण कराया जाता है। रेशमी बस्त्रों और विद्युत से व्याप्त चमक बालाजी महाराज की शोभा में अपार बृद्धि का संचार कर बालाजी दर्शन को मनोहारी बना देती है। इस दिन मंदिर प्रांगण में स्थानीय एवं क्षेत्रीय गायक कलाकारों की भीड़ रहती है जो बालाजी महाराज के चरणों में श्रावण गीत, भजन ओर कीर्तिनों को अर्पित कर अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। सावन की दिव्य छटा और घटा का वर्णन इनके गीतों में सहज ही हो जाता हैं वर्षा की रिम झिम फुहार के साथ मंदिर प्रांगण में आनंद रस की बर्षा होती है।

श्रावण मास की हरियाली तीज तिथि को जिस दिन सभी जगह भगवान के झूले डलते हैं, यहॉ भुंजरियॉ बोई जाती हैं और पूर्णिमा के दिन मंदिर पर चढ़ाई जातीं है। इसी दिन सायंकाल में लोग भुंजरियों के माध्यम से प्रेम का आदान –प्रदान कर मिलते हैं, जो बड़ों के आर्शीवाद और छोटों के प्यार का प्रतीक माना जाता है।

बर्ष में मनाये जाने बाले त्योहारों के क्रम में भाद्र मास की कृष्ण जन्माष्टमी को भी बालाजी में बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता है। इस दिन बालाजी धाम ब्रज का ही स्वरूप लगता है। अष्टमी की मध्य रात्रि को श्री कृष्ण भगवान की पूजा कर पुजारी लोग कृष्ण जन्म की घोषणा करते हैं और तभी से भक्तों बाबा नंद की बधाईयों का गायन शुरू हो जाता है। दूसरे दिन विभिन्न ग्वाल टोलियों द्वारा मटकी तोड़ी जातीी है। इस दिन सुबह से ही बच्चों में बड़ा उत्साह देखा जाता है। घर–घर जाकर बाबा नंद की बधाई गाना बच्चों के लिये तो मस्ती का माध्यम है ही बड़ों पर भी इस मस्ती की झलक दिखाई देती है। झींका, मजीरा और ढोलक के स्वरों में मिश्रित बाबा नंद की बधाई कुछ इस प्रकार सुनाई देती है।–

बधाई बाबा नंद की , जय कन्हैयालाल की ।

जै–जै गोपाल की, हाथी घोड़ा पालकी ।।

नंद के आनंद भये बाबा है.....।।

बार– बार इसी बधाई की पुर्नावृत्ति सभी के मन में उमंगों का संचार करती है। बाबा नंद के आनंद में बूढ़े .बच्चे और वयस्क सभी समान रूप से सम्मिलित होते हैं। बालाजी मंदिर पर ग्वाल बालों में खीरा और मूंगफली को जुटाया जाता है। और पंजीरी का प्रसाद वितरण किया जाता है।

भाद्र मास के उत्तरार्द्ध में जल झूलनी एकादशी (डोलग्यारस) भगवान् बालाजी के जल विहार का दिन है। इस दिन भगवान् बालाजी का जल विहार कराया जाता है। जल झूलनी एकादशी को भगवान् सूर्य नारायण की पालकी तैयार की जाती है, साथ ही ग्राम के नर सिंह मंदिर का भी डोल बनाया जाता है। पालकी में भगवान् की चौकी स्थापित कर श्रंगार से सुसज्जित किया जाता है सायं काल होते ही डोली का नगर में भ्रमण कराया जाता है। शास्त्रीय संगीत की मचलती चमलती स्वर लहरियॉ श्रद्धालुओं को उत्साहित करतीं हैं। बर्षा के कारण बनी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी दर्शन के आकांक्षी श्रद्धालु भगवान् भास्कर के साथ रहते हैं। पालकी को मुख्य –मुख्य स्थानों पर रोक कर भक्तों को भगवान् भुवन का भरपूर दर्शन लाभ कराया जाता है। नगर के द्वार–द्वार पर पहॅूच कर भगवान् भास्कर का पूजा अर्चन कर भक्त अपने को धन्य मानते हुये स्वागत करते हैं। नगरीय भ्रमण के पश्चात गाड़ी घाट से होते हुये भगवान् की पालकी को पहुज नदी के उस पार ले जाया जाता है। जहॉ स्थित भूतनाथ शिवमंदिर होते हुये राधा कृष्ण मंदिर पर भगवान् के डोल को ले जाते हैं। दौनों ही मंदिरों में आरती के माध्यम से पुजारियों द्वारा भगवान् का स्वागत होता है। तत्पश्चात पुष्पावती (पहूज नदी) के मध्य में भगवान् भास्कर का जल विहार कराया जाता है।नदी के मध्य में बहुत देर तक गम्मत (शास्त्रीय गायन) होता है। ढेलक की थापों और गायन की तानों से मस्त हुये श्रद्धालु नदी के समीप बनी अट्टलिकाओं के ऊपर से खीरे लुटाते हैं। पावन पुष्पावती के जल से भगवान् की प्रतिमा का अभिषेक कराया जाता है। भगवान् भास्कर के चरण पखारने को लालयित पुष्पावती अपने प्रवल बेग की ध्वनि से मूक संदेश प्रेषित करती है। नदी का जल सभी भक्तों के ऊपर छिड़का जाता है। फिर सीढ़ी द्वार से प्रवेश करा कर पालकी का मंरि प्रवेश होता है। भगवान् भुवन भास्कर की आरती की जातीा है और प्रसाद बितरण किया जाता है। प्रसाद को ग्रहण कर भक्त जन खुशी–खुशी अपने को धन्य मानते हुये घर लौटते हैं।

अशिवन माह की पितृामावष्या के पश्चात् शरदीय नवरात्रि महोत्सव बालाजी धाम में बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता है। हवेली प्रांगण में बाालाजी सेवा संघ द्वारा दूर्गा पूजन के साथ

नवदुर्गा महोत्सव को बृह्मद आयोजन किया जाता है। महोत्सव में नौ दिन तक अखण्ड रामचरित मानस पाठ के साथ मॉ जगदम्बा की नित्य नवीन झांकियों के दर्शन भी होते है। ग्राम में स्थित छोटी माता मंदिर पर आदि शक्ति जगतमाता जगदम्बा समिति के सेवको द्वारा भव्य झांकियॉ सजाईं जातीं है और भागवत कथा का आयोजन किया जाता है। अब तो बालाजी धाम के हर मौहल्ले मे देवी प्रतिमा को स्थापित किया जाता है। और नाच गान व विभिन्न उत्सव होते रहते हैं। दर्शनार्थियों की उमड़ती भीड और उत्साह से पूरा ग्राम नौ दिन तक भक्ति मय रहता है झॉकियों के आकर्षण सहज ही मन को मोह लेते है। नवमी के दिन कन्या भोज के साथ माता की प्रतिमाओं को विसर्जन किया जाता है।

दूसरे दिन बुराई के प्रतीक रावण को जलाकर अच्छाई की जीत के उत्सव के रूप में विजय दशमी का पर्व मानाते है। इस दिन भगवान् बालाजी महाराज को लोग इलाइची, डौंड़ा मिश्रित पान अर्पित करते हैं। तत्पश्चात बैर भाव का त्याग कर लोग आपस में एक दूसरे को पान खिला, गले मिलकर दशहरा मिलन समारोह मानाते है। दशहरा के चार दिन पश्चात् बालाजी मंदिर पर शरद की भूर्णिमा का उत्सव मनाया जाता है। शरद पूर्णिमा को रात्रि में प्रसाद के रूप में खीर बॉटी जाती है शरदोत्सव के साथ ही कार्तिक मास का स्वागत किया जाता है। इसी दिन से बाला जी धाम में महिलाओं द्वारा कार्तिक मास में ब्रत रखने का संकल्प लिया जाता है पूरे माह ब्रह्म महूर्त में स्त्रियॉ पुष्पावती में स्नान कर अपने ठाकुर श्री कृष्ण की पूजा करतीं हैं। कार्तिक मास के मध्यान्त में शुभ दीपावली का आगमन निश्चित रहता है। इसीलिये मंदिर की सफाई –पुताई इत्यादि व्यवस्थाओ को पूर्ण किया जाता है धनवंतरी जयंती अर्थात धन तेरस से ग्राम के नर नारी मंदिर पर दीपक रखने प्रारंभ कर देते हैं। दीपावली के दिन बाल रवि का विशेष श्रंगार किया जाता है। सायं चार बजे से ही मंदिर पर श्रद्धालुओं का आगमन शुरू हो जाता है। पूरे मंदिर को दीपकों और विभिन्न रौशनियों से सर्जाकर दीपमाला बनाई जाती है। दीप ज्योति की जगमगाहत से मंदिर की आभा द्विगुणित हो उठती है। लक्ष्मी पूजन के लिये उत्साह से सजे नर नारी मंदिर प्रांगण में दीप प्रज्जवलित कर नंदी में दीपदान करते हैं। श्रद्धालू भक्त जन सोत्साह अतिशबाजी करते हुये भगवान भास्कर से व्यापार, धन, धान्य में बढोत्तरी एवं अपने परिवार के कुशल क्षेम की कामना करते हैं।

दीपावली के दूसरे दिन यनि परमा के दिन यहॉ बुन्देल खण्ड के कौने–कौने से मौनब्रत लिये विभिन्न श्रद्धालु का आगमन होता है। वह जिस स्थान से आते हैं, वहीं से मौन ब्रत लेते हैं।

इन की भेष भूषा भी अलग ही रहती है। कच्छे बनियान पहिने ये श्रद्धालु रंग विरंगें फीते व फूंदने धारण किये रहते हैं। माथे पर बिंदियॉ आखों में काजल होठों पर लिपिस्टिक व पैरों में महावर लगाये लाठी और डंडियों से सुसज्जित इन श्रद्धालुओं को मौनी बाबा कहा जाता है। मंदिर प्रांगण में बुंदेली लोक संगीत रस को विखेरते हुये एवं चाचर डांडिया खेल कर ये अपना मौन ब्रत ब्रह्म बालार्क के दरवार में खोलते हैं। कला संस्कृति के इस अनूठे रंग को देखने के लिये इस दिन दूरवर्ती क्षेत्रों से भी विभिन्न लोगों का आगमन होता है।

देव प्रवोधिनी एकादशी के दिन यहॉ पहूज और अनगौरी संगम स्थल गोवर्धन पर लोग स्नान कर भगवान् भास्कर की पूजा अर्चना करते है। देव प्रवोधिनी एकादशी के दिन ऐसी मान्यता है कि देव शयनी एकादशी के दिन विश्राम के लिये श्री हरि विष्णु का पुर्नागमन होता है। अतः देव प्रवोधिनी एकादशी वो देवों की पुनः प्रतिष्ठिा की जाती है। इस दिन ईख (गन्ने) के माध्यम से भगवान् की पूजा की जाती है तथा घर–घर में द्वार पर देव अवागत हेतु दीपक रखे जाते हैं । इस दिन मंदिर पर नागिरिकों द्वारा फट्टाके भी चलाये जाते है एवं ग्राम में जितने भी मंदिर है सब पर दीपक रखे जाते हैं।

महत्वपूर्ण पर्व के रूप में मकर संक्रांति का विशेष महत्ब है। बैसे तो वर्ष मे बारह संक्राति पड़ती हैं लेकिन पौष मास की मकर संक्रांति के पर्व पर स्नान को विशेष माना जाता है। यह पर्व पूरे भारत बर्ष में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन सूर्य देव का प्रवेश मकर राशि में होता है। मकर राशि में प्रतिष्टि के साथ ही सूर्य की स्थिति में परिवर्तन होता है अर्थात सूर्य भगवान् दक्षिणायनसे उत्तरायन स्थिति में होते हैं।

बालाजी धाम में पर्व पुण्य प्राप्ति हेतु हजारों की संख्या में तीर्थ यात्रियों का आगमन होता है पौष माह की कड़कती सर्दी में कॉपते श्रद्धालु पावन पुष्पावती (पहूज नदी) में स्नान कर दॉत कटकताते हुये और आद्र वस्त्रों में ही भगवान् अंशुमाली को अर्ध्य अर्पित करते हैं। इस दिन तिल के पिसे हुये लेप को शरीर में लगाकर स्नान किये जाते हैं। तिल स्नान , तिल दान और तिल के ही भोजन का विशेष महत्व है।

लोग तिल के साथ खिचड़ी का भी दान करते है! इस दिन विशेष पकवानो के साथ लड्डू व मंगौड़े भी बनाये जाते हैं जो आगन्तुक यात्रियों और ग्राम बासियों का सुन्दर स्वल्पाहार माना जाता है! मकर संक्रांति की पूर्व संध्या पर बनाये गये लड्डू घरो मे बसंत पंचमी तक टक्कर देते हैं!

मकर संक्रांति के दिन व्यापारी कर्मचारी वर्ष के शुभारभ फलो के बारे जानने के लिये

पण्डितो से पात्र दिखाते है! वर्ष मे मकर संक्रांति का आगमन लाभदायक है या नहीं यह जारने की जिज्ञासा प्रयाः सभी की रहती है! इस दिन भी सप्त विरंगे पदिधानो मे सुसज्जित यात्रियों की आभा से पहूज नदी भी सप्त रंगी प्रतीत दीन होती है!

शरद की सिरहन के पश्चात् ऋतुराज बसंत का आगमन होता है! जहॉ प्रकृति अपने यौवन की मादकता को रंगविरंगे पुष्पो की सुगधं से सर्कन विखेरती है ,वही रैंगो के त्योहार होली के आक्रमन की सबको प्रतिक्षा करती है! प्रमाद का यास फाल्गुन जहॉ मनुष्यो को मतवाला बनाता है! वही रंगो के साथ –साथ भंग की रूपरेखा भी तैयार की जाती है! फाल्गुन मास के उत्तरर्द्ध में पड़ने बाली पूर्णिमा को होलिका दहन होता है! एक बार पुनः बुंराई पर अच्छाई की जीतीं होती है और बुराई (होलिका) अग्नि में भस्म हो जाती है ! इसी खुशी में होली का त्योहार हर जगह मनाया जाता है! भारत वर्ष मे विभिन्न तरीके से रैंगो के इस त्योहार को मनाते हैं! मगर बालाजी घाम की होली की बात ही कुछ और है!

होली आगमन के कुद दिन पूर्व से ही घर–घर में गोबर के वरवूले (उपले) बनाये जाते हैं! पूर्णिमा के दिन उन बरबूलों की मालाये बनाई जाती हैं! जिनमें से कुछ मलाओ की बालाजी मंदिर पर जलने बाली होली पर चढ़ाया जाता है! मंदिर द्वार के दोयी ओर होलिका की चिता का निर्माण होता है ! सारे ग्राम बासी होली की पूजा करने वहॉ एकत्रित होते है ! होलिका चिता के मध्य मे एक पताका स्थपित की जाती है! होलिका दहन के पश्चात पताका जिस दिशा मे गरती है उस दिसा से होली के आगमन पर पण्डितो द्वारा शुभारभ फल पर विचार किया जाता है तत्पश्चात् मंदिर पर जलने वाली होली जलाई जाती है!

बालाजी धाम में इस रंगोंत्सव को पॉच दिनो वक मनाया जाता हैं! होलिया दहन पूर्णिमा से लेकर रंगपंमी तक ग्राम मे होली मे त्योहार की धूम छायी रहती है! फागुन माह में फाग का पारंपरिक महत्व है! सांस्कृतिक कला की पुष्ट धरोहर फागे नगाड़यो की गनगनाहट के मध्य फगुवारो की मस्ती को प्रमाणित करती हैं! विभिन्न क्षेत्र से आने बाले फगुवारे मंदिन प्रांगण में अपनी कला–कौशल को विखेरते हुये सभी को आनंद रस में सरावोर करते है। रंग पंचमी के दिन यहॉ विशाल मेला लगता है। दर असल भगवान बालाजी महाराज की फाग इसी दिन होती है। रंग पंचमी के दिन मरीचमाली भगवान भास्कर को केसरिया बाना धारण कराया जाता है। पलाश के पुष्पों से निकाले गये शुद्ध प्राकृतिक रंग मं गुलाब जल, केवड़ा और अन्य सुंगधित इत्र मिलाकर रंग तैयार किया जाता है और चंदन की सुगंध मिश्रित उच्च किस्म के अबीर के साथ पण्डे पुजारी बालाजी

महाराज के साथ पहले फाग खेलते हैं। बाद में मंदिर प्रांगण में सभी आपस में फाग खेलते हैं। गुलाल उड़ाया जाता है। दिन भर चौक में रंगारंग कार्यक्रम चलता है। जहॉ एक ओर शास्त्रीय संगीत युक्त गम्मतों का आनंद देखा जाता है वहीं जगह–जगह फगुवारों की टोली में होली की मस्ती के दर्शन होते हैं।

इस प्रकार पूरे बर्ष भर बालाजी के पर्व, त्योहार और मेलों की धूम मची रहती है। इस छोटे से तीर्थ स्थल में स्थापित पाषाण यंत्र की शक्ति से सभी परिचित हैं। इन्हे ब्रह्म बाला, वरम देव, बालार्क और बालरवि आदि नामों से संबोधित किया जाता है। कुछ लोग इन्हे सारे ब्रह्माण्ड का देवता मानते है अतः ब्रह्मण्य देव के नमा से भी सम्बोधित करते हैं। बालाजी नाम की महिमा के बारे में जहॉ तक अनुमान है वह बाल अज या ब्रह्म बाला से संबंध रखता है। बाल अज का अपभ्रंश तद्भव शब्द ही बालाजी माना जाता है। कुछ लोग मराठाओं को मंदिर का निर्माण कर्ता मानते है इसलिये बालाजी शब्द की सार्थ कता को वहीं से लेते हैं। नाम का क्या शक्ति की सार्थकता सर्वव्यापी है और इनकी शक्ति के आगे सभी नतमस्तक हैं।

उदयाचल से उदित होने बाले बालार्क के सौन्दर्य से जो आनंदानुभूति होती है ठीक वैसे ही आनंद की अनुभूति प्रदान करने बाले देव इस मंदिर में विधमान हैं यही कारण है कि सदियों से यहॉ श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। मन की मुरादें पूरी करने बाले देव के ऊपर भारतीय परंपरा के अनुसार काफी चढ़ोत्तरी भी होती है जिससे मंदिर पर किये जाने बाले दान, पुण्य धर्मार्थ आयोजन होने बाले व्यय एवं चढ़ोत्तरी के कुछ अंश को मंदिर के जीर्णों द्वार के लिये भी बचाया जाता है।

बालाजी मंदिर की व्यवस्थायें

कश्यप गोत्र में जन्मे जिझौतिया ब्राह्मण सदाराम और भनुप्रकाश लिटौरिया पटा के साथ अपने बशं वृक्ष्ज्ञ में बृद्धि करने लगे। भगवान भास्कर के उपासक सदाराम के चार पुत्र और दूसरे भाई भानु प्रकाश के तीन पुत्र हुये। बरम जू काछी के परिवार समेत ये सातों भाई मंदिर को अपनी पुस्तैनी संपत्ति मानते थे अतः भगवान की सेवा पूजा के दायित्व के साथ साथ मंदिर पर आने बाली चढ़ोत्तरी पर भी ये अपना अधिकार समझने लगे।

सदाराम और भानुप्रकाश जैसे भक्तों की सच्ची निष्ठा और भक्ति से मरीचमाली भगवान भुवन की शक्ति के प्रत्यक्ष उदाहरण सामने आने लगे। आगा खॉ के आक्रमण करने के बाद का चमत्कार और नारोशंकर मराठा के कुष्ठ रोग ठीक हो जाने से मंदिर की ख्याति में चार चांद लगे। झांसी के सेनापति द्वारा बनाये जा रहे मंदिर की धर्मशाला पर आपत्ति लगाकर दतिया नरेश राव इंद्रजीत सिंह ने भी मंदिर के विकास की तरफ ध्यान दिया।

दतिया नरेश ने तो जागीर देने के को कहा था मगर ब्राह्मण है ने मात्र अहाते से ही काम चलाया कहते हैं दान करने बाले का हाथ नहीं पकड़ा जाता, अतः मंदिर पर काफी मात्रा में चढ़ोत्तर आने लगी। अखण्ड ज्योति के घृत के लिये और मंदिर खर्च के लिये मंदिर के नाम कई गामों मे खेत लगा दिये गये। जिनमें भूमि के कुछ अंश जहाँ तक ज्ञात है निम्न ग्रामों में है– उनाव, परासरी, रिछार, कामद,

ग्राम उनाव में मंदिर श्री बालाजी महाराज के तीन बाग हैं। जिन्हे बालाजी का बाग, टीलो बाला बाग और बैनाबाला बाग कहा जाता है।

दौनों ही सूर्यो पासक ब्राह्मण देव दूरदर्शी थे जिन्होने भगवान भास्कर की सेा पूजा में अपना जीवन व्यतीत कर दिया था, वह वैसी ही व्यवस्था अपने सातों पुत्रों से चाहते थे। अतः अन्त समय करीब जान उन्होने अपने सातों पुत्रों और उस काछी के पुत्रों को बुलाया। मंदिर से प्राप्त होने बाली आय के बारें में विचार विमर्श किया गया। अन्त में यह निर्णय लिया गया कि मंदिर की आय के दस बराबर हिस्से होंगे जिनमें सात हिस्सा इन सातों भाइयों के एक हिस्सा बरम जू काछी का और दो हिस्सा जो सदाराम और भानुप्रकाश ने अपने लिये निकाले थे वह मंदिर के विकास कार्य और भगवान के धर्मार्थ कार्यों में होने बाले व्यय के लिये निकाले गये। इस तरह एक सुंदर व्यवस्था देकर सदाराम और भानुप्रकाश की प्राण ज्योति भगवान बालाजी महाराज की अखण्ड ज्योति में विलीन हो गई।

सातों भाइयों के सात परिवार हुये अतः हर परिवार से एक मुखिया नियुक्त किया जाने लगा। मंदिर के सबंध में जो भी नीति बनाई जाती वह सातों मुखियों की सलाह एवं सहमति पर मान्य होती थी। देवालय पर रहने बाले काछी परिवार को देवालिया कहा जाने लगा।

मंदिर पर आने बाली आय को दो गागरों (घड़ों) में एकत्र किया जाता था। दिन भर की चढ़ोत्तरी को एक गागरी से निकाल कर दस बराबर हिस्से किये जाते जिसमें से आठ हिस्से पण्डों और काछी के और दो हिस्सा बालाजी के नाम एक दूसरी गगरी में डाल दिया जाता था। ध रे–धीरे भगवान बालाजी महाराज के हिस्से की चढ़ोत्तरी इतनी हो गई कि उसकी रक्षा करना मुश्किल कार्य बन गया। तब सातों मुखियों ने तत्कालीन राजा को इस विषय में प्रार्थना पत्र दिया जिस पर गौर करते हुये राजा ने वहाँ एक चौकीदार की व्यवस्था की और उस आय को अपने कोष की धर्मार्थ शाखा में रखवा दिया। मंदिर की व्यवस्था के लिये एक मैनेजर (व्यवस्थापक) की नियुक्ति की और तहसील दार को देख रेख के लिये रखा। चढ़ोत्तरी से एकत्रित आय के बटबारे को पाक्षित कर दिया गया तथा आयको गागरों में रखने की व्यवस्था बदलकर एक कोठरी में रखा गया जो

पूर्ण रूप से बंद थी तथा जिसमें एक खिडकी के द्वारा चढ़ोत्तरी को फेंका जाता था। इस तरह हर पंद्रह दिन में व्यवस्थापक और तहसील दार की निगरानी में बंटवारा होता जिनमें आठ हिस्से अलग व दो हिस्से मंदिर के विकास कार्य के लिये धर्मार्थ शाखा में चले जाते।

कालांतर में सात मुखियों में से एक ने मंदिर से मिलने बाली आय का आधा हिस्सा बालाजी महाराज को दान कर दिया था मगर उनके उत्तराधिकारियों ने लढ़कर उस आय के आधे हिस्से में से आधा करा लिया था तभी से बालाजी फण्ड में सवा दो हिस्सा धर्मार्थ शाख में जाता है और पौने सात हिस्से पण्डों को तथा एक हिस्सा काछियों को मिलता है। प्रारम्भ से ही आने बाले साधुओं को सदाबृत निराश्रयी अभ्यागतों की आहार बाल व्यारी भोग और मंदिर के राज भोग साथ ही साथ मंदिर की आवश्यक जरूरतों की पूर्ति एवं उपयोग में बाजार से लाई गई छोटी मोती बस्तुओं पर होने बाले व्यय को काटने के पश्चात हिस्सा बांटे जाते हैं।

(उनाव) बालाजी मंदिर के हिस्से में चौबीस दुकाने है जिनकी हर वर्ष तहसीलदार की उपस्थिति में नीलामी होती है ठीक उसी तरह बागों एवं खेतों की नीलामी भी होती है। शुरू में तो नीलामी के पैसे का घी चढ़ाया जाता था लेकिन अत धर्मार्थ शाखा में जमा होता है। कोठरी से ध न चोरी होने भय से व्यवस्था परिवर्तन किया गया जिसमें मंदिर पर चढ़ोत्तरी एवं आय को एकत्र करने के लिये दो गोलकें रखी गईं थी। एक गोलक में पैसे यानि सिक्के डाले जाते थे तो दूसरी में रूपये डाले जाने लगे। वर्तमान में तो गोलक के ऊपर तिजोरियॉ भी रखीं है। गोलके जब भर जाती है तभी हिस्सा बॉट होता है। लेकिन अब गोलकों के भरने में पॉच छः महीने लग जाते हैं।

पहले मंदिर की आय को राजा के अधीन राजकोष धर्मार्थ शाखा में रखा जाता था लेकिन आजादी के बाद जब रियासती राज समाप्त हो गया तो जिलाधीश महोदय की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट की धर्मार्थ शाखा में रखा जाने लगा।

विकसित नहीं, न ही यहॉ समुचित सौन्दर्यी करण हैं। जबकि विश्व का एक मात्र अनूठा सूर्य मंदिर केवल यही है। पुजारियों की लालफीताशाही के चलते यहॉ का विकास संभव नहीं क्योंकि अपने स्वार्थों को क्षत–विक्षत होते कोई नहीं देख सकता। किन्तु देव तो सभी के होते हैं और उन पर एकाधिकार संभव नहीं। पण्डों के पूवर्जों ने जो व्यवस्थायें दी थी आज ये लोग उन पर भी द्रढ़ नहीं अगर ऐसा होता तो मंदिर का बहुत विकास हो गया होता। आज जरूरत है पुनः इस व्यवस्थ में परिवर्तन करने की वर्षों से उपेक्षित इस तीर्थ स्थल के विकास एवं सौन्दर्यीकरण की ओर ध्यान देने की शताब्दियों वर्ष पूर्व मंदिर में स्थापित की थी जिसकी ओट में ये पण्ड़े पुजारी पीढ़ी दर पीढ़ी अपने उदर की पूर्ति करते रहे स्वार्थ लिप्सा में इन्हें अपने दायित्व निर्वाहन का भी ध्यान नहीं रहा।

हमारी शासन से यह अपेक्षायें है कि इस ऐतिहासिक सूर्य मंदिर बालाजी धाम की व्यव्स्थाओं में जो कमियॉ है उन्हे बदलते हुये नये तरीके से नई व्यवस्थाओं का निर्माण किया जाये। ताकि बालाजी धाम में विकास के नये सोपानों का श्री गणेश हो। इस नगरी का सौन्दर्यीकरण भी आवश्यक है। आने बाले यात्रियों को न यहॉ ठहरने के लिये आवास की व्यवस्था है और न ही भोजन की। साधानों की भी इतनी कमी है कि सायं काल पश्यचात ही यहॉ आवागमन में परेशानी होती है। जहॉ पर स्थायी विद्युत व्यवस्था होना चाहिये वहॉ पर स्ट्रीट लाइट का भी आभाव है और न ही बैठने के लिये, विश्राम के लिये कोई उपयुक्त स्थान नहीं है।

मंदिर प्रांगण को लेकर भी शासन से कई आपेक्षायें हैं। निश्चित रूप से इस तीर्थ स्थल पर अब शासन को ध्यान देना चाहिये। अभी तक इस स्थान के बारे में लोगों को दृष्टि कोंण पुरातन व्यवस्था बाली विचार धारा से जुड़ा हुआ था। लेकिन उसमें अनियमितताये आने के कारण प्राचीन परपाटी को बदलना जायज है। चंद लोगों की स्वार्थ पूर्ति के लिये हमें देव स्थल की गरिमा कम नहीं करना चाहियें।

हमारी शासन से यही आशायें है की इस तीर्थ स्थल को पर्यटक स्थल घोषित करें एवं मंदिर से एकाधिकार समाप्त कर सम्पूर्ण क्षेत्र को अपने अधिकृत करें तथा यहॉ उचित विकास प्रबंधन हो जिससे यहॉ पुनः प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा हो सके खनिज संपदा बच सके और ऐतिहासिक तीर्थ स्थल की सुंदरता हमेश बनी रहे। इसी आशा के साथ

सादर प्रेषित ।

शासन से अपेक्षायें

परिवर्तन प्रकृति का नियम है ईश्वर की इच्छा ही सर्वोपरि होती है जिसका सभी पालन भी करते हैं। व्यवस्थाओं में अव्यवस्थायें आना स्वाभाविक है और अव्यवस्थाओं मे सुधार के प्रयत्न ही मानवता का प्रतीक है।ऐतिहासिक तीर्थ स्थल बालाजी धाम में भगवान सूर्य का साक्षात प्रकाट्य माना जाता है यह स्थली शक्ति सम्पन्न है इसमें भी कोई शक नहीं। जहॉ एक ओर हम अन्य तीर्थ क्षेत्र और पर्यटक स्थलों को देखते हैं वहीं बालाजी धाम को भी। अन्य क्षेत्रों की तुलना में यह धाम